International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 310-313

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 310-313
www.allresearchjournal.com
Received: 17-12-2015
Accepted: 19-01-2016

डॉ. शिल्पा शर्मा
अतिथि विद्वान शारीरिक शिक्षा, शासकीय महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. शिल्पा शर्मा
अतिथि विद्वान शारीरिक शिक्षा, शासकीय महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा संभाग के महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का विष्लेशणात्मक अध्ययन

डॉ. शिल्पा शर्मा

सारांश
शोधार्थी ने खेलकूद का मानव जीवन में महत्व देखकर उससे होने वाले लाभों के संदर्भ में महाविद्यालयीन छात्राओं में खिलाड़ी और गैर खिलाड़ी के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का सकारात्मक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन में शोधार्थी ने रीवा संभाग के चारों जिलों को न्यादर्श के रूप में लिया, प्रत्येक जिलें से 05 महाविद्यालय चयनित किये गयें इन महाविद्यालयों से 02 शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी एवं 02 अभिभावक, प्रत्येक महाविद्यालय से चयनित किये गयें। इस प्रकार पूरे संभाग से 20 महाविद्यालय, 20 प्राचार्य, 40 शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी एवं 40 अध्ययनरत छात्राओं के अभिभावकों का चयन किया गया। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में 200 छात्राओं का भी रेण्डम विधि द्वारा चयन किया, जिनमें 100 खिलाड़ी एवं 100 गैर खिलाड़ी छात्रायें सम्मलित है। प्रत्येक महाविद्यालय से 05 खिलाड़ी एवं 05 गैर खिलाड़ी छात्रायें चुनी गई, जिन पर उपकरणों को शासित कर परिणाम प्राप्त किये गये। शोध क्षेत्र में 55.00 प्रतिशत प्राचार्य एवं शिक्षक क्रीड़ाधिकारी तथा 67.00 प्रतिशत छात्राओं का मत है कि महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का आभाव है।

शब्द कुंजीः रीवा संभाग, महाविद्यालय, छात्रा, खेलकूद एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना
शारीरिक शिक्षा के महत्व और उसकी सरगर्मी को प्लेटो ने पहचाना और कहा, ''क्रियाशीलता की कमी मानव के लिए अच्छे दशा को नष्ट करती है, जबकि गति और सिलसिलेवार ढंग से की गई कसरत इसे बचाती है और इसका संरक्षण करती है।'' जब मानव क्रियाकलाप वैश्विक क्रीड़ा अभियान के साथ मिल जाते हैं तब यह एक शक्तिशाली शिक्षा प्रचार माध्यम का रूप धारण कर लेती है तो शारीरिक शिक्षा कहलाती है।
शिक्षा एक 'कार्यकलाप' का प्रतिभास है। कोई भी कार्यकलापों से ही सीखता है। शिक्षा केवल क्लासरूम तक ही सीमित नहीं है यह खेल के मैदान, पुस्तकालय अथवा यहाँ तक कि घर में भी सीखी जा सकती है। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के वैयक्तिक जीवन को समृद्ध बनाने में प्रेरक सिद्ध होती है। शारीरिक शिक्षा का सुनिर्देशित कार्यक्रम स्वास्थ्यकर जीवन, सामाजिक दक्षता, अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य और समय का सदुपयोग करना सिखाता है। आधुनिक सन्दर्भ में 'शारीरिक शिक्षा' अधिक व्यापक और हमारे दैनिक जीवन के सम्बन्ध में सार्थक अर्थ रखती है। शारीरिक शिक्षा मनुष्य के शारीरिक क्रियाकलापों में और उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा है। शारीरिक शिक्षा वह शिक्षा है जो शारीरिक विकास के साथ शुरू होती है और मानव जीवन को पूर्णता की ओर ले जाती है, जिसके परिणामस्वरूप वह एक ह्रष्ट–पुष्ट और मजबूत शरीर, अच्छे स्वास्थ्य, मानसिक स्फूर्ति और सामाजिक भावनात्मक संतुलन रखने वाला व्यक्ति बन जाता है। ऐसा व्यक्ति नयी चुनौतियों से प्रभावी तरीके से लड़ने में सक्षम होता है और अधिक सार्थक व उद्देश्यपूर्ण तरीके से वह इनका सामना करने के योग्य बनता है। अतः ऐसे व्यक्ति को 'शारीरिक शिक्षित व्यक्ति' कहा जा सकता है।

क्लार्क डब्ल्यू. हीटरिंग्टोन – ''शारीरिक शिक्षा, शिक्षा का वह पड़ाव है जिसका सम्बन्ध प्रथमतया बच्चों में बाहुबल वाले क्रियाकलापों के लिए संगठन व नेतृत्व, सामाजिक मानकों के अनुरूप क्रियाकलापों के सहजात विकास और समायोजन से है, दूसरा स्वास्थ्य नियन्त्रण या वृद्धि जो क्रियाकलापों के नेतृत्व से सम्बद्ध है, स्वाभाविक रूप से जारी रहती है ताकि शिक्षा प्रक्रिया बिना किसी बाधा के चलती रहे।''
'नयी' शारीरिक शिक्षा शरीर के माध्यम से शिक्षा पर बल देती है जैसे खेलों, फिटनेस और शारीरिक शिक्षा के लिए दार्शनिक आधार, एक दर्शन जिसमें प्रत्येक क्रियाकलाप शारीरिक, मानसिक, सामाजिक

और बौद्धिक शक्ति को बढ़ाने में योग देता है जिससे व्यक्ति का सर्वोत्मुखी, समग्र एवं सुव्यवस्थित विकास होता है।

शारीरिक शिक्षा उन छात्रों तक ही केन्द्रित नहीं है जो स्कूल या कॉलेजों में पढ़ाई कर रहे हैं बल्कि यह जनसंख्या के हर वर्ग का बिना आयु, लिंग, शारीरिक योग्यता या शारीरिक स्तर के भेदभाव के सभी को सम्मिलित करता है। शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम केवल एथलीटों या खिलाड़ियों को प्रशिक्षण और उनकी दक्षताओं को विकसित करने के लिए ही नहीं बल्कि यह सारी जनता की रुचियों व आवश्यकताओं की भी पूर्ति करने के लिए होते हैं।

शारीरिक शिक्षा ने आज के युग में विशेष सार्थकता, अद्वितीय भूमिका और असीमित योगदान दिया है जैसे कि जैविक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करना। स्वामी विवेकानन्द ने बल दिया है कि, ''भारत को आज भगवत गीता की नहीं बल्कि फुटबाल के मैदान की जरूरत है।'' शारीरिक शिक्षा की न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य में भी महान् उपयोगिता है। शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व पर बल देते हुए रोशयू ने कहा है, ''यह शरीर का ठोस गठन ही है जो मन का सही और निश्चित संचालन करता है।'' सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशन भी शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित था उसने कहा था कि, ''देश के युवा का शारीरिक कल्याण राज्य के मुख्य सरोकारों में से एक होना चाहिए और जीवन की इस अवधि में शारीरिक कल्याण के सामान्य नियमों से भागने के गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।''

आज भारतीय महिलायें खेलों के क्षेत्र में विश्व को कड़ी चुनौती दे रही है। जिसका प्रमाण है कि ओलम्पिक में पदक, विश्व चैम्पियनशिप में पदक, एशियार्ड में पदक आदि। भारतीय महिलाओं का आज विश्व के हर क्षेत्र में लोहा माना जा रहा है इसी तथ्य को ध्यान में रखकर महाविद्यालयीन छात्राओं में खिलाड़ी और गैर खिलाड़ी के व्यक्तित्व, अभिवृत्ति और सामाजिक स्तर का पता लगाना आवश्यक है। किसी भी राष्ट्र का विकास स्वस्थ्य नागरिकों द्वारा ही संभव है शरीर के स्वास्थ्य के लिए खेल एवं व्यायाम ही एक विकल्प है। इतिहास में जब हम दृष्टि डालते हैं तो देखते है कि विभिन्न प्रकार के खेलों और व्यायामों का प्रचलन सदैव रहा है। समाज के विकास में महिलाओं की बराबर की हिस्सेदारी रही है महिलाओं की समाज के सभी क्षेत्रों में बराबर की हिस्सेदारी को देखते हुए महिला खिलाड़ी छात्राओं और गैर–खिलाड़ी छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन आवश्यक है।

आधुनिकतम वैज्ञानिक व्यक्तित्व को संगठित इकाई न मानकर गतिशील संगठन और एकीकरण की प्रक्रिया मानते हैं। इस सम्बन्ध में थार्य व शमलर ने लिखा है, ''जटिल पर एकीकृत प्रक्रिया के रूप में व्यक्तित्व की धारणा आधुनिक व्यवहारिक मनोविज्ञान की देन है।'' ड्रेवर ने लिखा है कि, ''व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिये किया जाता है, जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान–प्रदान व्यक्त करता है।''

शारीरिक शिक्षा की गतिविधियों में व्यक्तित्व का गहरा संबंध होता है तथा शारीरिक शिक्षा की गतिविधियाँ व्यक्तित्व का सही एवं पूर्ण विकास करती है। शारीरिक शिक्षा की गतिविधियाँ मनुष्य की अनेक प्रकार की जरूरतों को पूरा करती है तथा जीवन को सुन्दर सम्पूर्ण व आनन्ददायी बनने में मदद करती है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें सोचने, समझने तथा विचार करने की शक्ति होती है, व्यक्ति और समाज एक–दूसरे पर निर्भर हैं, उन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तित्व एवं सामाजिक स्तर के बारे में जन साधारण को बताने एवं उत्साहित करने की दृष्टि से इस क्षेत्र में खेलकूद विषय में ऐसा कोई शोध नहीं हुआ है और मेरा विश्वास है कि इससे भविष्य में महिलाओं का खेलकूद के प्रति दृष्टिकोण बदलेगा, तथा महिलाएं खेलकूद के प्रति उत्साहित होकर समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण में भागीदार बनेगी।

यह शोध निम्न प्रकार से महत्वपूर्ण होगा –

- गैर खिलाड़ी छात्राओं को खेलकूद में भाग लेने के लिए प्रेरित, उत्साहित एवं मार्गदर्शित करेगा।
- यह शोध महिलाओं को खेलकूद के दौरान समाज के साथ जुड़ने के अवसर तथा व्यायाम के प्रति रुचि उत्पन्न करेगा।
- यह शोध शारीरिक शिक्षक अथवा प्रशिक्षक के लिए महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के बारे में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन के रूप में कार्य करेगा।

उद्देश्य– महाविद्यालयों में छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधा का मूल्यांकन करना।

परिसीमांकन– शोध क्षेत्र का परिसीमन शोध कार्य के दोनो पक्षों भौगोलिक एवं अध्ययन की विषय वस्तु के आधार पर निम्नानुसार किया गया है–

1. भौगोलिक परिसीमन – शोध अध्ययन के रूप में, रीवा संभाग में स्थित चारों जिले रीवा, सतना, सीधी एवं सिंगरौली लिये गये है। इन जिलों में संचालित महाविद्यालय अध्ययन की परिसीमा में आवेगें। इन महाविद्यालयों में अध्ययनरत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं को अध्ययन की परिसीमा में लिया गया है।

2. विषय वस्तु का परिसीमन – अध्ययन की विषय वस्तु खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन पर परिसीमित है। शोधार्थी शोध क्षेत्र में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव का अध्ययन करेगा, साथ ही इन दोनों प्रकार की छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना एवं स्वास्थ्य की जानकारी भी प्राप्त करेगा। शोधार्थी महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं की स्थिति, छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक स्तर का भी अध्ययन अपने शोध में किया है।

न्यादर्श

शोधार्थी ने न्यादर्श की परिसीमा के रूप में रीवा संभाग के चारों जिलों को लिया है। प्रत्येक जिले से 05 महाविद्यालयों का चयन किया गया है। प्रत्येक महाविद्यालय से 02 शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी एवं 10 छात्राओं का चयन जिनमें 05 खिलाड़ी व 05 गैर खिलाड़ी छात्राएँ होगी। महाविद्यालयों में अध्ययनरत 40 छात्राओं के अभिभावकों को भी अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। इस प्रकार पूरे शोध क्षेत्र से 20 महाविद्यालय, 20 महाविद्यालयीन प्राचार्य, 40 अभिभावक, 40 शिक्षक/ क्रीड़ाधिकारी एवं 200 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। 200 छात्राओं में 100 खिलाड़ी एवं 100 गैर खिलाड़ी छात्राएँ सम्मिलित हैं। न्यादर्श चयन में रेण्डम विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन पद्धति

शोधार्थी का शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण मूलक अनुसंधान की श्रेणी में आता है। शोध कार्य के दौरान निम्न शोध विधियों एवं उपकरणों का समावेश किया गया है–

1. सर्वेक्षण विधि
2. अवलोकन विधि

चयनित विधियों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. साक्षात्कार पत्रक
2. प्रश्नावली

शोध क्षेत्र से संबंधित पूर्व में किये गये कार्यो की संक्षिप्त समीक्षा

किसी भी अध्ययन कार्य को करने से पहले उस विषय से संबंधित पूर्व विद्वानों के कार्यो का अवलोकन उससे संबंधित साहित्य के अध्ययन से अध्ययन कार्य में सहायता मिलती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने अपने सीमित प्रयासों से नजदीकी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में भ्रमण किया तथा विषय से संबंधित पूर्व में किए गए अनुसंधानों का अध्ययन किया, जो निम्नानुसार है– चौबे, एम., पाठक जितेन्द्र कुमार, द्विवेदी अम्बिका प्रसाद (1977–2001), दवे, आर. एच. (2004), मिश्र, रामभूषण (2004), शर्मा राकेश (2005–06), शुक्ला राज नारायण (2007) एवं त्रिपाठी प्रेमचन्द्र, मिश्र डॉ. सूर्य प्रसाद (2000), सिंह, राजेन्द्र (1981) ने खिलाड़ी और गैर खिलाड़ियों के बीच मनोवैज्ञानिक अंतर, सामाजिक एवं आर्थिक, खेल कौशल का अध्ययन किया।

प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र में संकलित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार हैं–

तालिका 1: शोध क्षेत्र में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अध्ययन (प्राचार्य साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्र.	रीवा संभाग के जिलों के नाम	न्यादर्श में चयनित महाविद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित प्राचार्यो की संख्या	महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का					
				अभाव है,		अभाव नहीं है		नहीं पता	
				संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
1.	रीवा	05	05	02	40.00	02	40.00	01	20.00
2.	सतना	05	05	03	60.00	02	20.00	00	00.00
3.	सीधी	05	05	03	60.00	02	20.00	00	00.00
4.	सिंगरौली	05	05	03	60.00	02	20.00	00	00.00
	योग	20	20	11	55.00	08	40.00	01	05.00

विश्लेषण एवं व्याख्याः उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अध्ययन, प्राचार्य साक्षात्कार प्रपत्र के माध्यम से किया गया है। न्यादर्श के रूप में पूरे शोध क्षेत्र से 20 प्राचार्य चयनित किये गये हैं। सतना, सीधी एवं सिंगरौली जिलों के 60 प्रतिशत प्राचार्यो का मानना हैं, कि महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का आभाव हैं, जबकि रीवा के 40 प्रतिशत प्राचार्य इस बात से सहमत हैं। इसी क्रम में रीवा के ही 40 प्रतिशत, तथा अन्य जिलों के 20 प्रतिशत प्राचार्य कहते हैं, कि छात्राओं हेतु खेल सुविधाओं का आभाव नहीं है। पूरे शोध क्षेत्र के 55 प्रतिशत प्राचार्य मानते हैं, कि छात्राओं हेतु खेल सुविधाओं का आभाव हैं, जबकि 40 प्रतिशत आभाव नहीं मानतें, 20 प्रतिशत प्राचार्यो को इस संदर्भ में जानकारी नहीं है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता हैं, कि महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अभाव है।

तालिका 2: शोध क्षेत्र में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अध्ययन (शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी प्रश्नावली पत्रक के आधार पर)

क्र.	रीवा संभाग के जिलों के नाम	न्यादर्श में चयनित महाविद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित शिक्षकों/ क्रीड़ाधिकारियों की संख्या	महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का					
				अभाव है		अभाव नहीं है		पता नहीं	
				संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
1.	रीवा	05	10	06	60.00	03	30.00	01	10.00
2.	सतना	05	10	05	50.00	03	30.00	02	20.00
3.	सीधी	05	10	06	60.00	03	30.00	01	10.00
4.	सिंगरौली	05	10	05	50.00	03	30.00	02	20.00
योग		20	40	22	55.00	12	30.00	06	15.00

विश्लेषण एवं व्याख्या : शोध क्षेत्र में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अध्ययन, शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। इस अध्ययन में पूरे संभाग से 40 शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी न्यादर्श के रूप में चयनित किये गये हैं। रीवा व सीधी जिलों के 60 प्रतिशत शिक्षक एवं सतना सिंगरौली के 50 प्रतिशत शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी इस बात से सहमत हैं, कि महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का आभाव हैं, जबकि सभी जिलों के 30 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं, कि खेलकूद की सुविधाओं का आभाव नहीं है। इस प्रकार पूरे शोध क्षेत्र में 55 प्रतिशत शिक्षकों का कहना हैं, कि खेलकूद की सुविधाओं का अभाव है, 30 प्रतिशत शिक्षक अभाव नहीं मानतें, जबकि 15 प्रतिशत शिक्षक इस बात से अनभिज्ञ है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता हैं, कि शोध क्षेत्र में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का आभाव है।

तालिका 3: शोध क्षेत्र में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अध्ययन (छात्रा प्रश्नावली पत्रक के आधार पर)

क्र.	रीवा संभाग के जिलों के नाम	न्यादर्श में चयनित महाविद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित छात्राओं की संख्या	महाविद्यालय स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का					
				अभाव है,		अभाव नहीं है		नहीं पता	
				संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
1.	रीवा	05	50	35	70.00	07	14.00	08	16.00
2.	सतना	05	50	32	64.00	09	18.00	09	18.00
3.	सीधी	05	50	36	72.00	06	12.00	08	16.00
4.	सिंगरौली	05	50	31	62.00	05	10.00	14	26.00
योग		20	200	134	67.00	27	13.50	39	19.50

विश्लेषण एवं व्याख्याः उपरोक्त तालिका क्रमांक 3 में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अध्ययन, छात्रा प्रश्नावली के आधार पर किया गया है। न्यादर्श के रूप में प्रत्येक महाविद्यालय से 10 छात्राएँ इस प्रकार से पूरे शोध क्षेत्र से 200 छात्राओं का चयन किया गया हैं, जिन पर प्रश्नावली के माध्यम से प्रश्न पूछें गये हैं। रीवा जिले की 70 प्रतिशत, सीधी की 72 प्रतिशत छात्राओं का मानना है, कि महाविद्यालय में उनके लिये खेल सुविधाओं का अभाव हैं, जबकि सतना की 64 प्रतिशत, सिंगरौली की 62 प्रतिशत छात्रायें इस बात से सहमत हैं। पूरे शोध क्षेत्र में 67 प्रतिशत छात्राएँ मानती हैं, कि महाविद्यालय में उनके लिये खेलकूद की सुविधाओं का अभाव है। 13 प्रतिशत छात्राओं का कहना हैं, कि आभाव नहीं है। कुछ छात्राएँ ऐसी भी हैं, जिन्हें इस संबंध में कुछ पता नहीं हैं, जिनका प्रतिशत 19.50 है।

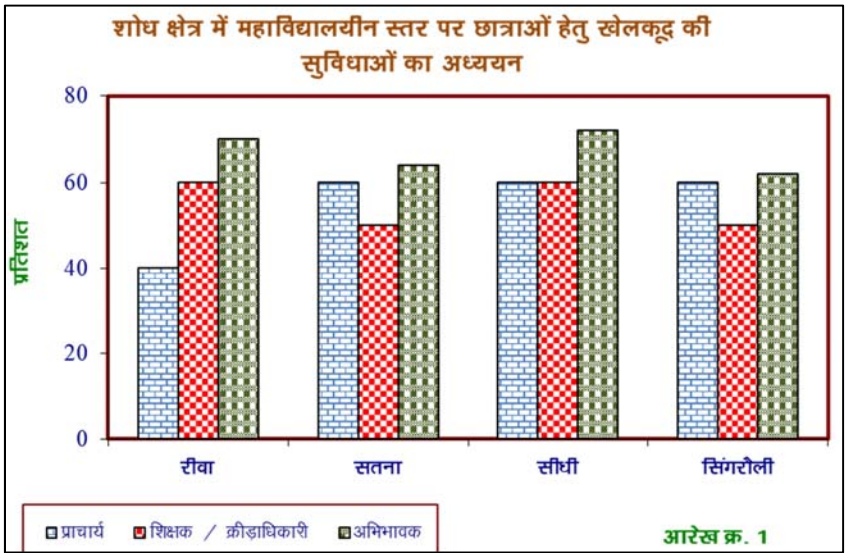

उपरोक्त तालिकाओं (क्रमांक 1, 2, 3) एवं आरेख से स्पष्ट हैं, कि शोध क्षेत्र में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का आभाव है।

निष्कर्ष

- शोध क्षेत्र में महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का अध्ययन, प्राचार्य साक्षात्कार पत्रक द्वारा किया गया, 55 प्रतिशत प्राचार्य मानते हैं, कि उनके महाविद्यालय में खेलकूद की सुविधाओं का आभाव है। 40 प्रतिशत प्राचार्य आभाव नहीं मानते, जबकि 05 प्रतिशत ऐसे भी प्राचार्य हैं, जिन्हें इस संबंध में जानकारी नहीं। (तालिका क्रमांक – 1)
- शोध क्षेत्र के 55 प्रतिशत शिक्षक क्रीडाधिकारियों का इस संबंध में कहना हैं, कि महाविद्यालयों में छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का आभाव हैं, जबकि 30 प्रतिशत क्रीड़ाधिकारी खेलकूद की सुविधाओं का आभाव नहीं मानते हैं। 15 प्रतिशत शिक्षक ऐसे भी हैं, जिन्हें इस संबंध में जानकारी नहीं है। (तालिका क्रमांक – 2)
- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 67 प्रतिशत छात्राओं का कहना हैं, कि उनके महाविद्यालय में खेलकूद की सुविधा का आभाव हैं, जबकि 13.50 प्रतिशत आभाव नहीं मानती है। 19. 5 प्रतिशत गैर खिलाड़ी छात्राएँ ऐसी भी हैं, जिन्हें इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है। (तालिका क्रमांक – 3)

उपरोक्त बातों से स्पष्ट हैं, कि शोध क्षेत्र में 55.00 प्रतिशत प्राचार्य एवं शिक्षक क्रीड़ाधिकारी तथा 67.00 प्रतिशत छात्राओं का मत है कि महाविद्यालयीन स्तर पर छात्राओं हेतु खेलकूद की सुविधाओं का आभाव है।

सुझाव

- व्यायाम करने हेतु प्रत्येक महाविद्यालय में व्यायाम शाला होनी चाहियें।
- खेल का मैदान, नियोजित ढंग से बनवाकर, समयचक्र के हिसाव से खिलाड़ियों को विभिन्न खेल खिलाने चाहियें।
- महाविद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में खेल सामग्री खरीदी जाय जिससे खिलाड़ियों के लिये खेल सामग्री का आभाव न हों।
- संविदा क्रीड़ाधिकारियों की नियुक्ति न कर, नियमित क्रीड़ाधिकारी महाविद्यालयों में रखे जाय।

सन्दर्भ

- चौबे, एम., पाठक जितेन्द्र कुमार, द्विवेदी अम्बिका प्रसाद, "शारीरिक शिक्षा के मूलधार" कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली प्रकाशन 1977–2001.
- मिश्र रामभूषण – "रीवा जिले में वि.वि. स्तरीय खिलाड़ियों का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन" कुरुक्षेत्र वि.वि. कुरुक्षेत्र 2004.
- शर्मा राकेश – "रीवा जिले के बास्केटबाल प्रशिक्षणार्थी खिलाड़ियों के खेल कौशल के विकास का आलोचनात्मक अध्ययन" अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा 2005–06.
- शुक्ला राज नारायण – खेल एवं शारीरिक शिक्षा, राजीव प्रकाशन, 123, स्वामी विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद, 2007.
- त्रिपाठी प्रेमचन्द्र, मिश्र डॉ सूर्य प्रसाद – शारीरिक शिक्षा एवं क्रीड़ा मनोविज्ञान, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, बानगंगा, भोपाल, मध्य प्रदेश, 2000'.
- दवे, आर. एच. –: एजुकेशन एण्ड ह्यूमन डेवलपमेन्ट, एवरग्रीन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004.
- सिंह, राजेन्द्र – कम्प्रीजन ऑफ पर्सनाल्टी करेक्टिसटिक्स ऑफ स्पोर्टस मैन एण्ड नान स्पोर्टस मैन जीवाजी वि.वि. ग्वालियर अप्रैल 1981.